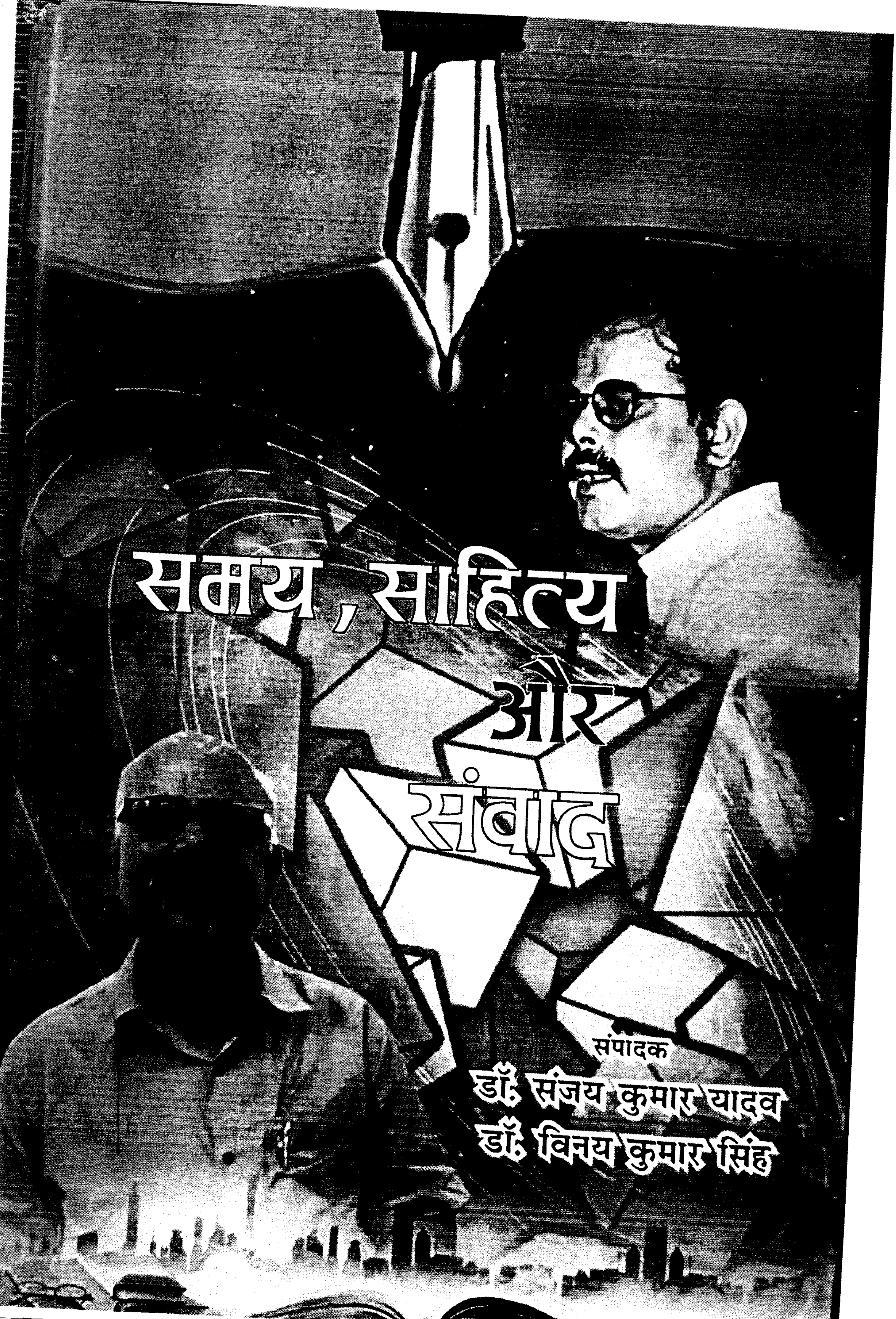
समय, साहित्य
और
संवाद
संपादक
डॉ. संजय कुमार यादव
डॉ. विनय कुमार सिंह

समय, साहित्य और संवाद

संपादक
डॉ. संजय कुमार यादव
डॉ. विनय कुमार सिंह

अभिधा प्रकाशन

परामर्शक-मंडल
प्रो. कल्याण कुमार झा, डॉ. राकेश रंजन, डॉ. सुनील कुमार

संपादक-मंडल
डॉ. हेमा कुमारी, डॉ. भोला प्रसाद यादव, डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन', अतुल आजाद

ISBN : 978-93-92342-46-2

प्रथम संस्करण
2022

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

प्रकाशक
अभिधा प्रकाशन
रामदयालु नगर, मुजफ्फरपुर-842002
दिल्ली कार्यालय
जी72, गंगा विहार, गोकुलपुरी, दिल्ली-110094

अक्षर-संयोजन
एस. कुमार

आवरण
हिमांशु राज

मुद्रक
बी० के० ऑफसेट, दिल्ली-32

मूल्य
1100/- (ग्यारह सौ रुपये)

Samay, Sahitya aur Samwad
Edited By **Dr. Sanjay Kumar Yadav & Dr. Vinay Kumar Singh**
Rs. 1100.00

अनुक्रम

संपादकीय

शब्द-सारथी की अक्षर-यात्रा/ डॉ. संजय कुमार यादव एवं डॉ. विनय कुमार सिंह/9

संस्मरण

1. श्रम, पुरुषार्थ और प्रतिभा का प्रतिमान : सतीश कुमार राय/ डॉ. परमेश्वर भक्त/13
2. 'पर-उपकार वचन मन काया' के विग्रह : डॉ. सतीश कुमार राय/ डॉ. जंगबहादुर पांडेय 'तारेश'/17
3. डॉ. सतीश कुमार राय का लेखकीय व संपादकीय व्यक्तित्व/ साकेत बिहारी शर्मा 'मंत्र मुदित'/28
4. साहित्य-सागर का अनमोल मोती/डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना/34
5. प्रतिमानों के प्रतिमान डॉ. सतीश कुमार राय 'अनजान'/चतुर्भुज मिश्र/38
6. संवाद का सहज संवेदन और संवेदन का सार्थक सृजन/डॉ. संजय पंकज/42
7. चंपारन का गौरव बढ़ानेवाले विद्वान डॉ. सतीश कुमार राय/ अंजनी कुमार सिन्हा/48
8. वो देखो! रौशन हुआ जाता है रस्ता.../डॉ. रामेश्वर द्विवेदी/51
9. अनजान को जितना मैंने जाना है/प्रो. (डॉ.) सुरेंद्र प्रसाद केसरी/61
10. चंपारन के रत्न : डॉ. सतीश कुमार राय/प्रो. (डॉ.) पुष्पा गुप्ता/64
11. डॉ. सतीश कुमार राय : एक सहज व्यक्तित्व/प्रो. (डॉ.) संत साह/69
12. प्रो. सतीश कुमार राय : सहज व्यक्तित्व के पुरुषार्थी/प्रो. राजीव कुमार झा/72
13. मेरी राय में प्रो. सतीश कुमार राय/डॉ. श्रीकांत सिंह/75
14. एक चुंबकीय व्यक्तित्व/डॉ. मधुसूदन मणि त्रिपाठी/78
15. डॉ. सतीश कुमार राय 'अनजान' से नामचीन तक/डॉ. मृगेंद्र कुमार/81
16. अनजान से अभिज्ञान तक/डॉ. तारकेश्वर उपाध्याय/88
17. मेरे लिए सतीश के होने का मतलब/डॉ. अनिल कुमार राय/92
18. उपलब्धियों के शिखर-पुरुष डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. शैल कुमारी वर्मा/95
19. शीतल झरने के मीठे पानी जैसा व्यक्तित्व : प्रो. सतीश कुमार राय जी!/ डॉ. शकील मोईन/98
20. गुफ्तगू में ही झलकती विद्वत्ता/जफर इमाम/100
21. भाई सतीश : एक दृष्टि/लालबाबू शर्मा/103

22. विरल व्यक्तित्व के धनी डॉ. सतीश कुमार राय 'अनजान'/ डॉ. रामनरेश पंडित रमण/105
23. नमामि वीथिनायकम्!/डॉ. उपेंद्र प्रसाद/108
24. सतीश : मेरा मित्र/मनोज मोहन/113
25. हर दिल अजीज : प्रोफेसर सतीश कुमार राय/डॉ. राजीव कुमार/116
26. सहज और निश्छल साथी : सतीश कुमार राय/अशोक गुप्त/120
27. सहज, सरल और आत्मीय बंधु प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/ अरविंद कुमार/124
28. जीवेत शरदः शतम्/डॉ. मधु रचना/131
29. कर्मठता और मेधा के प्रतिमान भाई 'अनजान'/डॉ. नागेंद्र सिंह/134
30. भैया, साइकिल चलाना सीख लीजिए न/डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी/137
31. प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय 'अनजान' से जुड़े संस्मरण/सुरेश गुप्त/149
32. संघर्ष की प्रतिमूर्ति/अरुण गोपाल/163
33. डॉ. सतीश कुमार राय : एक साहित्यिक गौरव-पुरुष/डॉ. दिवाकर राय/165
34. प्रखर व्यक्तित्व, समर्पित शख्सियत डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. सीमा स्वधा/181
35. प्रोफेसर राय को जैसा मैंने जाना/डॉ. अनिता सिंह/185
36. डॉ. सतीश कुमार राय : मेरी नजरों में/डॉ. विजयिनी/187
37. अभिनव अनजान/डॉ. जगमोहन कुमार/189
38. मेरे प्रेरक, मेरे सर्जक : डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. हेमा कुमारी/193
39. अनमोल स्मृतियाँ/डॉ. चंद्रलता कुमारी/201
40. गुरुवर : एक परिचय/डॉ. राकेश कुमार/205
41. सहज व्यक्तित्व और प्रखर कर्तृत्व के प्रतिमान/डॉ. कुमार अनुभव/208
42. मेरे गुरुदेव डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. राकेश रंजन/212
43. सर के सान्निध्य में : एक संस्मरण/डॉ. हर्षलता सिंह/217
44. हिंदी के बहुआयामी साधक सतीश राय 'अनजान'/डॉ. संदीप कुमार सिंह/220
45. शोध की अभिलाषा से गुरुदेव मिले/डॉ. संजय कुमार सिंह/222
46. गुरुवर डॉ. सतीश कुमार राय के चरणों में समर्पित संस्मरण के दो शब्द/ डॉ. विजय कुमार पांडेय/225
47. अतीत के पन्नों में मेरे गुरुवर डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. रश्मि कुमारी/228
48. मेरे जीवन-पथ का पाथेय/डॉ. प्रकाश कुमार/232
49. समन्वय और सामंजस्य के अद्भुत कलाकार डॉ. सतीश कुमार राय/ डॉ. प्रीति मणि/237
50. हिंदी के विशाल छायादार वृक्ष प्रो. सतीश कुमार राय/डॉ. यशवंत कुमार/241

51. मेरे गुरु प्रो. सतीश कुमार राय/डॉ. प्रवेश कुमार पासवान/245
52. हिंदी साहित्य के नवल स्तंभ प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/ डॉ. राजेश कुमार चंदेल/247
53. आकाशधर्मा गुरु/डॉ. जितेंद्र कुमार/250
54. आकाशधर्मा गुरुवर सतीश कुमार राय/डॉ. भोला प्रसाद यादव/253
55. सहजता, सरलता और सहृदयता के छतनार वटवृक्ष : श्रद्धेय गुरुवर/ डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'/261
56. शोध-मर्मज्ञ प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/डॉ. चंद्रभान राम/265
57. अभिनंदन-अभिनंदन/कुमारी रोशनी विश्वकर्मा/269
58. कवि सतीश कुमार राय को जितना मैं जानता हूँ/अविनाश कुमार पांडेय/272
59. सहज व्यक्तित्व : डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. गुंजन श्रीवास्तव/276
60. ज्ञान के सागर/डॉ. पूजा/279
61. आँखों देखा सुख/अतुल आजाद/281
62. प्रेरक व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धा-निवेदन/रश्मि शर्मा/286
63. मेरे प्रेरक और दिशा-निर्देशक/शारदा सिन्हा/288
64. गुरु-कृपा और मैं/पिंकी कुमारी/290
65. दिशाबोध करानेवाले प्रेरक आचार्य सतीश कुमार राय/सुजाता कुमारी/292
66. आचार्यत्व को धन्य करनेवाले गुरु/गीतांजलि कुमारी/296
67. आदरणीय गुरुवर डॉ. सतीश कुमार राय/रेशमी कुमारी/299
68. मेरे अर्द्धनारीश्वर : मेरी दृष्टि में/प्रभा राय/302
69. मेरे पिता : जैसा मैंने जाना/डॉ. प्रज्ञा सुरभि/305
70. डॉ. सतीश कुमार राय : एक व्यक्तित्व के अनेक आयाम/समीक्षा सुरभि/309
71. 'अनजान' से अध्यक्ष तक/प्रो. त्रिविक्रम नारायण सिंह/318
72. सिद्ध आचार्य की षष्टिपूर्ति/प्रो. कल्याण कुमार झा/333
73. सारस्वत साधना के सिद्ध साधक : सतीश कुमार राय/डॉ. वीरेंद्रनाथ मिश्र/346
74. देखा न कोहकन कोई फ़रहाद के बग़ैर/डॉ. राकेश रंजन/350
75. ओहदेदार होने से अधिक आदमी होने की कला/डॉ. उज्ज्वल आलोक/361
76. शिक्षक, अध्यापक एवं गुरु के रूप में प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/ डॉ. सुशांत कुमार/367
77. 'हिंदी विभाग एक परिवार है'/डॉ. संध्या पांडेय/372
78. 'अपनी मिट्टी का ऋण अब तक नहीं उतार पाया हूँ!'/डॉ. पुष्पेंद्र कुमार/374
79. कुशल प्रशासक डॉ. सतीश कुमार राय/मनोज कुमार/384
80. प्रेरणादायक गुरु डॉ. सतीश कुमार राय/अमित कुमार कर्ण/386

मूल्यांकन

81. 'अब नहीं मैं गीत गाने जा रहा हूँ' : डॉ. सतीश कुमार राय : एक समग्र मूल्यांकन/ प्रो. (डॉ.) अरुण कुमार/389
82. सतीश कुमार राय 'अनजान' का कवित्व : एक टिप्पणी/प्रो. रवींद्र उपाध्याय/412
83. उपेक्षित जनपदीय रचनाशीलता के प्रतिबद्ध संकलक-उद्धारक व्यक्तित्व/ प्रो. रमेश ऋतंभर/415
84. चंपारन और प्रो. राय : कहियत भिन्न न भिन्न/डॉ. विनय कुमार सिंह/418
85. डॉ. सतीश कुमार राय की संपादन-दृष्टि/डॉ. सुनील कुमार/425
86. डॉ. सतीश कुमार राय की शोध एवं आलोचना-दृष्टि/डॉ. पवन कुमार/448
87. 'दर्द सहने की तो आदत बहुत पुरानी है'/डॉ. पंकज कर्ण/467
88. शोध का प्रतिमान : एकांकीकार भुवनेश्वर का यथार्थबोध/डॉ. अनिता कुमारी/471
89. कवि, शायर डॉ. सतीश कुमार राय/राहुल कुमार/475
90. प्रखर शोध-दृष्टि का प्रतिमान : पत्रकार प्रेमचंद/सपना कुमारी/479
91. डॉ. सतीश कुमार राय की आलोचना-दृष्टि/रितु प्रिया/488
92. समृद्ध साहित्यिक-सांस्कृतिक परंपराओं का आईना/दिलीप कुमार/497
93. गोपाल सिंह 'नेपाली' : एक मूल्यांकन/सोनम कुमारी/501
94. डॉ. सतीश कुमार राय की दृष्टि में 'नेपाली'/प्रशांत प्रसाद/505

साक्षात्कार

95. डॉ. सतीश कुमार राय से एक अंतरंग बातचीत/ डॉ. माधव कुमार/514
96. 'अध्यापन मेरे लिए पेशा ही नहीं, धर्म भी है।'/ डॉ. सतीश कुमार राय से डॉ. अनु की बातचीत/537

कविता

97. साहित्यकार श्री सतीश कुमार राय की साठवीं वर्षगाँठ पर/व्रतराज 'विकल'/542
98. हे ज्ञानवान!/डॉ. विनय कुमार सिंह/545
99. सतीश राय होने का मतलब/डॉ. सतीश कुमार 'साथी'/546
100. गुरुवर की अंतस्-गरिमा/अंजनी अपूर्वा/548
101. डॉ. सोनी की दो कविताएँ/549
102. वीणा द्विवेदी की दो कविताएँ/552
103. अक्षर-देह रजनीगंधा है/डॉ. संजय कुमार यादव/563

जीवन-वृत्त/577
चित्र-वीथिका/593

सारस्वत साधना के सिद्ध साधक : सतीश कुमार राय

–डॉ. वीरेंद्रनाथ मिश्र

अतीव प्रातिभ। अप्रमेय व्यक्तित्व। गौरवर्ण। आर्य देहयष्टि। दूरदृष्टि। प्रथम दृष्टया–आर्य-आचार्य। सदैव सुस्मित, मुस्कुराता-खिलखिलाता। वीर वरेण्य। सभी शंकाओं का निराकरण। सभी शंकाओं का समाधान। सभी प्रश्नों का माकूल उत्तर। निडर-निर्भीक। वाग्मिता ऐसी कि सभी श्रोता वाह! वाह! कर उठें। आपादमस्तक काव्यात्मक लावण्य से लबरेज। चलने में, बोलने में, हँसने में, बोलने-बतियाने में, उठने-बैठने, प्रत्येक पग-निक्षेप में दृश्यकाव्य का रसात्मक संस्पर्श। यही हैं सरस्वती के लाड़ले वरदपुत्र प्रो. सतीश कुमार राय।

नई सोच का उदार क्षितिज इनके तीसरे नेत्र में उत्तरोत्तर उदात्त और असीम विस्तार को जन्म देता है।

प्रो. सतीश कुमार राय सच्चे अर्थों में सर्वविधा-पारंगत निष्णात आचार्य हैं। निरुक्तकार यास्क की दृष्टि से आचार्य वह होता है, जो अपने शिष्यों के लिए अर्थ या बुद्धि का आचमन करता है–'आचिनोति अर्थान् बुद्धिमिति वा'। मैं इनके प्रभूत विविध विषयों पर दिए व्याख्यानों को सुनता रहा हूँ, लिखे हुए को पढ़ता रहा हूँ, तो आश्चर्य-विमुग्ध हो सोचता रहा हूँ कि इतनी अल्प अवधि में एक व्यक्ति ने गुण-संपदा से विभूषित ज्ञान की किरणों से आलोकित, गुणवत्ता से स्पंदित ऐसे इंद्रधनुषी चिंतन की सृष्टि कैसे कर ली!

शीर्ष कोटि के साहित्य-विभूति पुरुष सतीश कुमार राय ऐसी ही साहित्य-विभूतियों में हैं, जिन्होंने शब्द-यज्ञ का श्रेष्ठतम कर्म आजीवन संपादित किया है। उनका साधना-प्रवण जीवन गुरुओं के पावन सान्निध्य में शुश्रूषा भाव से सतत समर्पित रहा। छात्र-जीवन शब्द-साधना करते बीता। छात्र के रूप में विश्वविद्यालय के निष्णात आचार्यों के सान्निध्य में

साहित्य-साधना निरंतर चलती रही। उत्तरोत्तर सोपान पर पग धरती, बढ़ती रही। अब तो वाग्मिता की सिद्धि मिली, दूर-सुदूर तक प्रसिद्धि मिली। उच्चतम अंक परीक्षाओं में प्राप्त कर विभिन्न स्तरों पर स्वर्णपदक प्राप्त किए। अपनी बेमिसाल प्रतिभा को प्रतिष्ठित किया। और, अब अध्यापक हुए सन् 1990 में, तबसे लगातर लंबी अवधि गहन स्वाध्याय करते बीती। कितना पढ़ा और कितना उसको हृदय में पचाया? जीवन के रस के रूप में कितना सुंदर सार्थक किया? प्रो. सतीश कुमार राय के शिक्षक-जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि क्या है? ये प्रश्न-बिंदु जब मेरे मन में उठते हैं, तो कामेश्वर शर्मा, प्रो. प्रमोद कुमार की प्रतिभा, वक्तृत्व-शक्ति, विषय की प्रस्तुति की अपूर्व क्षमता की स्मृति हरी हो जाती है। कठिन-से-कठिन शास्त्रीय चिंतन को किस अधिकार, कैसी प्रभावशीलता और हृदयग्राहिता के साथ प्रबुद्ध श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत करते रहे हैं वे। मंत्रमुग्ध हो उन गहन विचारों की ज्योति से अपने अंतर को आकुलित-आंदोलित किया करते हैं ये। ये वर्गों में व्याख्यान देते हों या साहित्य-समारोहों में मंचों पर, विचार-गोष्ठियों में किन्हीं जटिल विषयों पर अपने अगाध ज्ञान का तर्कयुक्त शैली में अनुशीलन ही क्यों न करते हों, स्थान और परिवेश के कारण इनकी भाषा और अभिव्यक्ति-शैली में अंतर तो आ ही जाता है। परंतु वाणी की अभिव्यक्ति में आरोह-अवरोह की विलक्षण भंगिमा पद-पद पर फूटती है, शब्द और अर्थ के तारतम्य में लय, गीतात्मकता के अनहद नाद की अमंद आनंद की लहरें किसको भावाविष्ट न कर लेतीं। इनकी प्रभावशाली वक्तृता, जटिल विषयों को भी चित्रवत् हृदयंगम कराने की प्रेषणीयता की सारस्वत सिद्धि को देखकर मन में बार-बार सुन-गुनकर विस्मय-विमुग्ध हो सोचता हूँ, कैसी मेधा है, इतनी तीव्र और शिक्षकोचित कैसी यह अंत:प्रज्ञा है, नव-नव उन्मेषशालिनी। शिक्षक की सबसे बड़ी सिद्धि यह नहीं है कि कितने ऊँचे पदों पर विराजमान हैं। पद के कारण ऊँचे वेतनमान के भोक्ता हैं। नहीं, कदापि नहीं। सफल-सच्चा शिक्षक वह है, जो क्लिष्ट और श्लिष्ट विषयों को स्वयं हृदयंगम करे और पूरी पारदर्शिता के साथ दूसरे जिज्ञासुओं तक उसका संप्रेषण करे, उसके हृदय-दर्पण पर प्रतिफलित करे उसकी अंतर्धारा को, उसकी जीवन-शक्ति को, जीवन-शैली को।

अध्यापन-कला में एक अनिर्वचनीय आनंद का, मधुरता के अमृतोपम रस का अभिस्राव होता है, जिसे संत कवि कबीर ने कहा है–'रस गगन

गुफा में अजर झरे'। विषय का ज्ञान प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं, उसमें हृदयंगमता की अनुभूति के ऐश्वर्य की सुषमा और ऊष्मा के स्फुलिंग की विमुग्धकारिणी इंद्रधनुषी छटा की आभा विभासित नहीं हो तो शिक्षण में रस की मधुर स्रोतस्विनी कहाँ और कैसे फूटेगी? जो शिक्षक ज्ञान और अनुभव के अमृत को अपने जिज्ञासु छात्रों, प्रबुद्ध श्रोताओं के हृदय की गहराई तक संप्रेषित, आंदोलित और आप्लावित कर सका, वही तो शिक्षकों का शिरोमणि है, शुभ्रमुकुट-मणि विभासित है। सतीश कुमार राय। सचमुच के आचार्य-प्रोफेसर। उनकी साधना, सिद्धि और शक्ति की मीमांसा के क्रम में महाकवि कालिदास-विरचित 'मालविकाग्निमित्रम्' नाटक की मर्मस्पर्शी पंक्तियाँ याद हो आती हैं, संन्यासिनी कोशिकी ने अपना यह चिंतन कितना उदात्त प्रस्तुत किया है–

शिलष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था संक्रांतिरन्यस्य विशेषयुक्ता।
यस्योभयं साधु स शिक्षकाणां धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव॥

कुछ गुणीजन ऐसे होते हैं, जिनके ज्ञान की किरणें उनके अंतर को आलोकित करती हैं, पर कुछ गुणीजन ऐसे हैं, जो अपने ज्ञान या अनुभव की अमंद किरणों के आलोक से औरों को उल्लसित भी करते हैं। धन्य हैं वे कृती (यशस्वी) शिक्षक जिनमें दोनों ही गुणवत्ताएँ एकत्र समाहित हैं। स्वयं तो ज्ञानदीप से आलोकित हैं ही, उस आलोक को औरों के हृदय में भी प्रदीप्त करने में सक्षम और समर्थ हैं। प्रो. सतीश कुमार राय सफल शिक्षक के निकष पर एकदम खरे उतरते हैं। अग्निज्वाला में भी नितांत शुद्ध और उज्ज्वल स्वर्ण-कमल से–'हेम्न संलक्ष्यते ह्यग्नो विशुद्धः श्यसामिकाऽपि वा'–अग्नि की तीव्र ज्वालाओं में ही सोने की शुद्धता की परीक्षा होती है। प्रो. सतीश कुमार राय की अध्यापन-शैली विभिन्न विषयों के सतत अध्ययन-अध्यापन स्वाध्याय-प्रियता से अनुप्रेरित और सुभासित है। अध्ययन की गंभीरता और विविधता का ऐसा अटूट अनुष्ठान है, जो आज के विरले शिक्षकों में पाया जाता है।

प्रो. सतीश कुमार राय ऐसे ही विशिष्ट सुधी-शिक्षक हैं, जो केवल विषयों की विवेचना करते हुए उनकी अतल स्पर्शी गहराई में पैठकर विचार-रत्नों से विद्यार्थियों, शोधार्थियों, प्रबुद्ध रसज्ञ श्रोताओं में ज्ञानदीप को प्रज्वलित भी करते हैं। उसके सौरभ से सुवासित करने की अपूर्व क्षमता भी

रखते हैं। प्रेरणादायी अध्यापन-शैली का नया मानदंड गढ़ा है इन्होंने, जिसे-परखने की, अनुभूति की, पैनी दृष्टि की शक्ति का जिसके अंतस् में विकास होता है-वही जानता है, उद्बुद्ध होता है-जो जाने सो जाने!

-एसोसिएट प्रोफेसर,
विश्वविद्यालय हिंदी विभाग,
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।